चतुर्थ अध्याय

4. देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय आर्थिक यथार्थ के विविध आयाम

मध्यमवर्ग में समाज का वह वर्ग आता है, जिसकी आर्थिक स्थिति औसत-रूप से अच्छी नहीं होती । अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी होने तथा उच्चवर्ग की बराबरी की भावना के कारण समाज का यही वर्ग सबसे अधिक संघर्ष करता है । आमदनी कम तथा खर्च अधिक होने के कारण मध्यमवर्गीय व्यक्ति आमदनी के अन्य साधनों की तलाश करता है । परिवार में एक भी सदस्य की बेकारी आर्थिक स्थिति पर बुरा असर डालती है । इसलिए इस वर्ग के लोग निरन्तर कार्यों में व्यस्त रहते हैं और अपने आप को आगे बढ़ाना चाहते हैं।

मध्यमवर्ग सुशिक्षित वर्ग है, और बौद्धिक दृष्टि से भी सर्वाधिक योग्य इसी वर्ग के व्यक्ति होते हैं; परन्तु अर्थ संकट से घिरे इस वर्ग के लोगों की मानसिक शक्ति शनैः-शनैः क्षीण होने लगती है। वह तनावग्रस्त व कुंठित हो जाता है । बेरोजगारी तथा बढ़ती महँगाई भी इसके कारण हैं ।

स्वतंत्रता के पश्चात् मिश्रित अर्थ प्रणाली और राष्ट्रीय स्तर पर हुए नियोजन से समाज के आर्थिक जीवन में जबरदस्त परिवर्तन हुआ। सामाजिक व्यवहार, सामाजिक आदान-प्रदान और संबंधों की अपेक्षाओं में भी बदलाव आया । इस परिवर्तन में आर्थिक तत्त्वों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । समाज के आर्थिक जीवन में अर्थ-सापेक्ष वर्गगत पहचान तो नहीं बन पाई, किन्तु एक वर्ग-संघर्ष ने सामाजिक जीवन में, विशेषकर मध्यमवर्ग के जीवन में, तनाव और बिखराव अवश्य पैदा किया । इससे मूल्य विघटन तो हुआ ही, सर्वाधिक नैतिक पतन मध्यमवर्ग के व्यक्ति का हुआ, क्योंकि वर्गगत विषमताओं का सामना इस वर्ग को ही करना पड़ रहा था । उच्चवर्ग के निकट स्थापित होने की प्रबल आकांक्षा ने उसकी विवेक बुद्धि को दुर्बल बना दिया था क्योंकि

बेकारी, अपर्याप्त वेतन इत्यादि कारणों से उनकी इच्छायें और सपने साकार नहीं हो पाते थे । इसलिए मध्यमवर्गीय लोगों में कुण्ठा, घुटन और मानसिक विकृतियाँ निरन्तर फैलती गईं । यही सब देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्गीय आर्थिक यथार्थ के द्वारा चित्रित किया है ।

4.1 आर्थिक स्थिति

देवेश ठाकुर ने मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति को बड़ा ही जटिल दिखाया है । उनहोंने इस वर्ग को उच्च, मध्यम और निम्न के अनुसार बाँट कर ही आर्थिक स्थिति का निर्णय लिया है । एक तरफ तो यह वर्ग निम्नवर्ग के साथ खड़ा दिखाई देता है और दूसरी तरफ यह वर्ग उच्चवर्ग के समान ही दिखलाई पड़ता है। इसलिए हम यहाँ पर उनके मध्यमवर्ग को उच्च मध्यमवर्ग, मध्य मध्यमवर्ग और निम्न मध्यमवर्ग के अनुसार ही उनकी आर्थिक स्थिति को दिखलायेंगे।

आर्थिक स्थिति ठीक न हो तो निम्न मध्यमवर्ग अशान्त रहता है। धनाभाव के कारण उसे विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है और कभी-कभी तो अपमान भी सहन करना पड़ता है; विवशता जो ठहरी । देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास 'भ्रमभंग' में दिखाया है कि चंदन की कैफियत उसके व्यक्तित्व का मूल्याँकन करती है- "अपना कमरा । कमरे में प्रवेश करता हूँ। एक अजनबीपन-सा महसूस करता हूँ । यह सारा सामान कितने का होगा? सौ से अधिक का नहीं । बेचने जाऊँ तो पचास का भी नहीं । आयु के इक्कीस साल में मेरी स्थिति पचास रुपये की भी नहीं है।"[1]

अर्थाभाव के कारण निम्न मध्यमवर्ग के लोग अपनी या अपने बच्चों की शिक्षा भी ढंग से पूरी नहीं कर पाते । इच्छा और योग्यता होने पर भी अर्थाभाव के कारण कुछ निम्न मध्यमवर्गीय युवक उच्च प्रतियोगिता परीक्षाओं में बैठ नहीं पाते । कई स्थानों पर मध्यमवर्गीय लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत ही नाजुक दिखाई देती है और उन्हें पैसे उधार लेकर अपना काम चलाना

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 40

पड़ता है । 'भ्रमभंग' उपन्यास में चंदन को जब इंटरव्यु के लिए बम्बई जाना होता है तो उस समय उसके पास कुछ नहीं होता और वह किराए के लिए पैसे अपने दोस्तों से उधार माँगता है । पैसों के साथ-साथ पैंट-शर्ट आदि भी दूसरों से माँग कर ही इंटरव्यु के लिए जाता है। देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास 'जनगाथा' में भी दिखाया है । "बस स्टॉप की ओर चलते हुए सहसा दिमाग में आता है- शोभा को सफर के लिए कुछ पैसे भी तो चाहिए होंगे । घर में पैसे नहीं हैं। मैं जानता हूँ । महीने के आखिरी दिन हैं । तभी सोहन की याद आ जाती है । सोहन का ऑफिस पास ही में है। मैं घड़ी देखता हूँ । ग्यारह बज रहे हैं । सोहन ऑफिस में आ गया होगा। मैं उसी तरफ चल पड़ता हूँ ।

सोहन ऑफिस में आकर ही बैठा है । मुझे इस वक्त आया देखकर उसे थोड़ा आश्चर्य होता हैं ।

वह मेरे लिए चाय मँगवाता है । मैं उससे अपना रोना रोता हूँ।

- अरे यार, बस इतनी-सी बात ।'

मैं उसे देखता रह गया हूँ । वह उठकर अलमारी खोलता है।

- दो सौ दे दूँ.....?'

- दे दे..... ।'

वह सौ-सौ के दो नोट निकालकर मेरे हाथ में रख देता है। मुझे लगता है, मेरी जबान पर ताला लग गया है ।"[1]

देवेश ठाकुर के उच्च मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति ठीक है लेकिन फिर भी वह सुखी नहीं है । यह हमें उनके 'इसीलिए' उपन्यास में देखने को मिलता है । अवस्थी के पास सब-कुछ है लेकिन फिर भी वह सुखी नहीं है और जीवन को घुट-घुटकर जीने को मजबूर है । "अब मैं हूँ, यह बड़ा-सा फ्लैट है और 'फिक्सड डिपाजिट' है । पैसा है, सुविधा भी है..... । लेकिन क्या मैं सुखी हूँ.... । कौन-सा सुख है मुझे.... । बस इस अकेलेपन के

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 445

सुख के अलावा ।"[1] इसके साथ-साथ उच्च मध्यमवर्गीय परिवार के लोग पैसे को ही महत्त्व देते हैं तथा उसके बल पर ही निश्चित हो जाते हैं कि हमारा परिवार सुख से जीवन व्यतीत करेगा । 'इसीलिए' उपन्यास में अवस्थी की माँ उसे छोड़कर कहीं बाहर जा रही है और पैसे की चिन्ता से निश्चित है । वह अपने पुत्र अवस्थी को लिखती है- "कुछ नकदी ले जा रही हूँ.... । बदले में तेरे लिए कुछ गहने छोड़ दिए हैं । मेरी तरफ से अपनी बहु को दे देना । फिर कहती हूँ- मुझे खोजने की कोशिश मत करना। पुलिस को इतला मत देना... और फजीहत होगी । पैसे की तुझे कोई कमी नहीं रहेगी.... । इसलिए तुझे लेकर मुझे कोई चिंता नहीं है । अब तू बड़ा हो गया है, अपनी संभाल कर सकता है । अपनी नई जिंदगी शुरू कर । मैं जहाँ भी रहूँगी.... जब तक रहूँगी तेरे लिए दुआएँ करती रहूँगी।"[2] उच्च मध्यमवर्ग के लोगों की आर्थिक स्थिति तो बहुत अच्छी होती है लेकिन अधिकतर देखने में आता है कि निम्न मध्यमवर्ग के लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी खराब होती है कि उन्हें अपने दिनचर्या के सारे सामान खरीदने में भी बहुत दिक्कतें आती हैं । उनके पास आय के स्त्रोत बहुत सीमित होते हैं । मध्यमवर्ग की आय का मुख्य स्त्रोत नौकरी है और कुछ व्यक्तियों की आय का साधन छोटा-मोटा व्यापार है । जिस स्त्रोत से भी आय होने की संभावना हो, वह उधर ही रूचि दिखाता है ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति को हम यदि देखें तों कहीं-कहीं मध्यमवर्ग बहुत ही गरीब दिखाई देता है तो कहीं अमीर लगता है । यह सब मध्यमवर्ग के विभिन्न वर्गों के कारण है । देवेश ठाकुर के उपन्यासों में हम देखते हैं कि एक तरफ तो मध्यमवर्ग के लोगों के पास धन का अभाव दिखाई देता है और वे अपना जीवन कुण्ठाओं, दु:खों और परेशानियों में व्यतीत कर रहे हैं और उन्हें उधार लेकर अपना काम

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिए), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 23
2. वही, पृ० 22-23

चलाना पड़ता है तथा दूसरी तरफ मध्यमवर्ग के लोगों के पास धन की कोई कमी नहीं है और उनके पास हर प्रकार की सुख-सुविधाएँ हैं लेकिन फिर भी उन्हें वह सुख नहीं मिल पाता जिसकी तलाश में वे अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देते हैं । देवेश ठाकुर के मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति के विभिन्न रूप हमारे सामने आए हैं जिनको उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है ।

4.2 अर्थ-लोलुपता का चित्रण

निम्न मध्यमवर्ग और उच्च मध्यमवर्ग दोनों धन के लोभी हैं । उच्च मध्यमवर्ग निम्न मध्यमवर्ग से अधिक धन-लोभी है, क्योंकि उसकी आवश्यकताएँ भी उच्च होती हैं । 'जंगल के जूगनू' की नायिका पलक अपनी माँ और बहन के स्वार्थपूर्ण व्यवहार से दु:खी है, फिर भी स्वयं के बल पर वह संघर्षरत होकर आगे बढ़ती रहती है । जब उसकी बहन की अर्थ-लोलूपता बढ़ जाती है, तो वह कहती है - "यह फ्लैट जिस पर तू अपना हक जता रही है, उसकी एक-एक रसीद मेरे पास है और इसका एक-एक पैसा मेरे बैंक से दिया गया है । बेशर्मी और स्वार्थ को भी एक सीमा तक ही सहन किया जाता है । पैसे के लिए तूने तो अपना आप ही खो दिया"[1]

'अपना-अपना आकाश' में देवेश ठाकुर ने मध्यमवर्गीय कलाकारों की अर्थ-लोलुपता को दिखाते हुए कहा है- "सही कला कहाँ है आज । सही कला जीवन से जुड़ी होती है और आदमी को ऊँचा उठाने में अपना सहयोग देती है.... लेकिन आज हालत यह है कि जो लोग कला की दुनिया में घुसपैठ करने में सफल हो गए हैं, वे सिर्फ पैसा और शोहरत ही कमाना चाहते हैं और इस सबके लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं ।"[2] इसी तरह मध्यमवर्गीय लेखकों का भी यही हाल है । वे अपने लेख लिखते हैं

---

1. देवेश ठाकुर, जंगल के जुगनू, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2004, पृ॰ 83
2. रोहिणी शिवबालन (प्र॰सं॰), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ॰ 171

और सिर्फ पैसा कमाने के लिए ही किताबें छपवाते हैं । यह देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास 'जनगाथा' में दिखाया है । "यही कि तुम उन पर एक मोटी-सी किताब लिखोगे-किताब छपेगी और तुम्हें रॉयल्टी मिलेगी। रॉयल्टी से तुम अपने लिए, सिर्फ अपने लिए कुछ सुविधाएँ और जोड़ लोगे । कुछ कपड़े, कुछ क्रॉकरी और कुछ बैड्शीटस । बस, मैं जानता हूँ कि तुम लोगों की सारी क्रान्तिधर्मिता यहीं तक आकर चुक जाती है.... ।"[1]

मध्यमवर्ग के लोगों में धन की लालसा निरन्तर बढ़ती रहती है और वे केवल धन को ही सब कुछ मानने लग जाते हैं । जब मध्यमवर्ग के पास धन आता है या कोई पद प्राप्त हो जाता है तो उससे उनकी लालसा और भी अधिक बढ़ जाती है । 'गुरुकुल' उपन्यास में दिखाया है कि जब डॉ० तिवारी के पुत्र विश्वास को डॉक्टर की नौकरी मिल जाती है तो इससे उनकी धन लालसा और अधिक बढ़ जाती है । "डॉक्टर बनते ही उसके लिए अच्छे-अच्छे घरानों से शादी के प्रस्ताव आने लगे । लेकिन डॉ० तिवारी के लिए घरानों से ज्यादा महत्त्व पैसों का था। उन्होंने सोच लिया था कि विश्वास की शादी में उन्हें कम से कम 3 लाख तो मिलने ही चाहिएँ ।"[2] मध्यमवर्ग के लोग मान-सम्मान से अधिक धन को महत्त्व देते हैं । इसी कारण विश्वास धन कमाने के लिए डॉक्टरी के साथ-साथ औरतों की सप्लाई का काम भी करने लगा जो उसके भविष्य के लिए खतरनाक साबित हुआ । उसकी डिस्पैंसरी से पुलिस ने बहुत-सा धन बरामद किया, जिसका विश्वास के पास कोई जवाब नहीं था । उसे पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया जाता है । जब वह वापिस आता है तो इस सबके लिए वह अपने पिता को जिम्मेदार ठहराता है और उसकी धन के प्रति लालसा को बताता है । "आपकी नजर सिर्फ पैसे पर अटकी रहती है । आप मुझे भी हमेशा यही सीख देते रहे कि बेटा पैसा

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 290
2. वही, देवेश ठाकुर रचनावली-3 (गुरुकुल), पृ० 59

बटोरो। पैसा होगा तो सब कुछ हो जायेगा। अब हो गया न पैसे से सब कुछ।"[1]

मध्यमवर्ग के लोगों में धन की लालसा होती है और वे निरन्तर धन अर्जित करते रहना चाहते हैं ताकि उनका भविष्य अच्छे से व्यतीत हो सके । 'अन्तत:' उपन्यास में एक स्थान पर दिखाया है कि सुभाष वसुधा को कह रहा है –

– "तुम एडवरटाइजिंग में क्यों नहीं आ जाती।' सुभाष पूछता है।

– 'क्या होगा उसमें?' वसुधा के स्वर में लापरवाही है ।

– 'बहुत पैसा है.... ।'

'अपने लिए मेरे पास काफी से ज्यादा है और ज्यादा का क्या करूँगी....।'

– 'पैसा कितना भी ज्यादा क्यों न हो, कभी ज्यादा नहीं होता।"[2]

इस प्रकार मध्यमवर्ग के लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं के कारण उनके अन्दर लोभी प्रवृत्ति पनपती रहती है जिसके कारण वे अधिक से अधिक धन कमाना चाहते हैं और मान-सम्मान को दाँव पर लगाकर वे केवल पैसे को महत्त्व देते हैं जिससे कई बार उन्हें भयंकर परिणाम भी भुगतने पड़ते हैं । इस वर्ग के लोगों में हमेशा धन में निरन्तर वृद्धि करने की सोच बनी रहती है ।

4.3 सम्पत्ति मकान का चित्रण

मध्यमवर्ग के पास कितनी सम्पत्ति है, उपन्यासों में इस बारे में अलग-अलग स्थानों पर विभिन्न रूपों में दिखाया गया है । मध्यमवर्ग के पास अपना मकान है या नहीं; इस संबंध में भी कई स्थानों पर संकेत मिलते हैं । नौकरी करने वाले मध्यमवर्गीय समाज के लोग बदली होने पर इधर-उधर आते

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (गुरुकुल), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 62
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-3 (अन्तत:), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 346

जाते रहते हैं; अत: सब जगह अपना मकान बनवा नहीं सकते । अपने नगर से बाहर जाकर किराये पर मकान लेना पड़ता है और अनेक व्यक्तियों को तो अपने ही नगर में, अपना स्वयं का मकान न होने के कारण किराये पर रहना हाता है । 'भ्रमभंग' का निम्न मध्यमवर्गीय चंदन इक्कीस साल की उम्र में ही किराये की जिंदगी बसर करने के लिए विवश हो जाता है । किराये की साईकिल, किराये के कपड़े, किराये के जूते। इन्टरव्यू में देहरादून से बम्बई पहुँचने के लिए उसे रेल का किराया जुटाने में हाड़-तौड़, दौड़-धूप करनी पड़ती है । बम्बई में कॉलेज लेक्चरर बन जाने पर भी उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं होता। वह अन्तर्द्वन्द्व का शिकार होता है । उसके खोखले संस्कार उसे निरन्तर भ्रमित करते हैं- "कितने सारे निषेध । आधी जिन्दगी अभावों, उपेक्षाओं और अपमानों के बीच बीती । आगे की आधी निषेधों के बीच बीतेगी । हम लोग-हम लोगों का वर्ग । समूचे जीवन की आवश्यकताओं को जुटाने में खपा दो । जीवन का कोई अर्थ ही कहाँ है हमारे लिए । हमारे लिए तो जीवन बस संघर्ष है, उपेक्षा है, अभाव है और सूनी महत्वाकांक्षा ।"[1] मध्यमवर्ग का व्यक्ति कुछ न होते हुए भी बहुत कुछ दिखाने की कोशिश करता है तथा समाज में अपनी महत्त्वता को दिखाता है, दूसरी तरफ उच्च मध्यमवर्ग के पास अपनी सम्पत्ति भी होती है और मकान भी। 'इसीलिए' उपन्यास में दिखाया गया है कि जब मध्यमवर्ग का व्यक्ति विदेशों की यात्रा करता है तो वह महँगी चीजों को खरीदने की बात करता है । "तुम्हें मालूम है, पिछले साल मैं अमेरिका गया था। सिंगापुर होता हुआ । लौटा तो बहुत-सा सामान उठा लाया....। फिर वे कमरों में घूम-घूम कर विदेशी सामान दिखाने लगा । टू-इन-वन । याशिक कैमरा । कपड़ा धोने की मशीन । इलैक्ट्रिक शैविंग सेट.... । कैसेट.... । वीडियो । कपड़े । बैड कवर्स....। डेकोरेशन्स । नेल कटर.... । सीजर्स.... । सूइयाँ.... । बटन...।"[2] इस

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 154
2. वही, देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिए), पृ० 83

उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि उनके पास अपना घर होता है जो बड़ी सोच-समझकर बनाया जाता है । इसमें कहाँ क्या होना चाहिए और क्या लगाना है? "अब देखो मुझे किस बात की कमी है । सोचा था, दोनों बूढ़े-बुढ़िया इतने बड़े फ्लैट में मजे से रहेंगे । कितनी लगन से यह घर बनवाया था । हर कमरे में अटैच्ड बाथरूम है..... । तुम्हें मालूम है, इस टू बैडरूम फ्लैट में बाईस ट्यूब लाइट्स लगी हैं ।"[1] इसके साथ-साथ उच्च मध्यमवर्ग के लोग अपने कमरों की सजावट की ओर भी ध्यान देते हैं । महँगी और सस्ती हर प्रकार की वस्तुओं में सुन्दरता को उभारने का प्रयास निरन्तर करते रहते हैं । कमरे में अपने सामान को रखने के तरीके और उनको सजावटी सामान की तरह ही उपयोग करते हैं । "नाइट गाउन । रॉ सिल्क पर गुलाब की पंखुड़ियाँ सजी हुई । बड़े बैड पर झक सफेद चादर । सेमल की रूई के तकिए । मध्यम गति से एयर कंडीशनर चलता हुआ । दाहिनी ओर ड्रेसिंग टेबल । बायीं ओर किताबों का छोटा-सा शेल्फ और ऑफ व्हाइट खादी के शेड वाला टेबल लैम्प । पलंग से लटका हुआ फोन । बराबर में बड़ा-सा वार्ड रोव.... ।"[2] उच्च मध्यमवर्ग के लोग अपनी सम्पत्ति-मकान को दिखाने की कोशिश करते हैं तथा नौकर आदि भी रखना चाहते हैं। इसके साथ-साथ वे अपने रहन-सहन को अच्छे तरीके से प्रदर्शित करते हैं । "बाल्कनी खूब बड़ी है । दोनों और मनी प्लांट की लतरों की छाया है और सामने जंगले पर खिला हुआ बोगनविला। नौकरानी अभी-अभी चाय रख गई है। केन की आराम कुर्सियाँ और डनलप की रंग-बिरंगी गद्दियाँ ।"[3]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मध्यमवर्ग के लोगों का जीवन और धन-सम्पत्ति एक समान नहीं है । अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार ही उनके पास सम्पत्ति और मकान हैं तथा उनकी जीवन-शैली है । एक तरफ निम्न

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिए), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 83
2. वही, देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), पृ० 115
3. वही, पृ० 120

मध्यमवर्ग निरन्तर किराए की जिंदगी बसर कर रहा है और दूसरी तरफ उच्च मध्यमवर्ग के पास अपना सब-कुछ है । वह अपने मकानों को सजा-सँवारकर रखता है और उसके पास सभी प्रकार की सुविधाएँ होती हैं तथा वह जीवन को अच्छे ढंग से जीने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है लेकिन फिर भी वह सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं कर पाता और जीवन को दु:खों में ही व्यतीत करने को मजबूर होता है ।

4.4 बेकारी की समस्या का चित्रण

बेकारी या अर्द्ध बेकारी मध्यमवर्गीय समाज को लंगड़ा बना रही है। इस से आर्थिक स्थिति बिगड़ती ही जाती है । बेकारी से निम्न मध्यमवर्ग अशान्त रहता है । इसी के कारण उसके जीवन में अस्थिरता और असन्तोष उत्पन्न होते हैं । आधुनिक शिक्षा के प्रसार से उच्च शिक्षा प्राप्त असंख्यक युवक-युवतियाँ नौकरी की खोज में प्रतिवर्ष निकलते हैं, पर बहुत कम को ही अपेक्षित नौकरी मिलती है। जिन्हें मिलती है उनकी प्राय: कोई न कोई सिफारिश होती है। मध्यमवर्ग में हाथ का काम करने का अच्छा नहीं समझा जाता । अत: युवक डिग्रीयाँ लेकर केवल शिक्षा-संस्थानों या दफ्तरों में नौकरी करना चाहते हैं । वैसी नौकरी नहीं मिलती तो उनकी आर्थिक स्थिति गिरने लगती है । 'भ्रमभंग' का चंदन मध्यमवर्गीय पढ़ा-लिखा काबिल युवक है । उसे तथा उसके जितेन्द्र, सुरेन्द्र आदि दोस्तों को नौकरी के लिए अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है । इस भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति अपना विरोध प्रकट करता हुआ चंदन जितेन्द्र को पत्र लिखता है, "हमें अपने लिए भी संघर्ष करना है और व्यवस्था के लिए भी । हमें गंदगी को निकालना ही होगा। चाहे वह अपने घर की हो या पूरी व्यवस्था की ।"[1]

मध्यमवर्ग की उच्च आकांक्षाएँ होती हैं लेकिन उनके पास धन का अभाव होता है, जिस कारण वे योग्यता होते हुए भी प्रतियोगिता परीक्षाओं में नहीं बैठ पाते । यदि बैठ भी जाते हैं तो इस भाई-भतीजावाद वाले तथाकथित

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 127

प्रजातन्त्र में नौकरियाँ कभी बिना सिफारिश के नहीं मिलती । अत: उनकी ऊँची आकांक्षाएँ सिर्फ सपना बन जाती हैं । "योग्यता होते हुए भी आकांक्षाओं को पूरा न कर पाने के कारण उसमें कुण्ठा, घुटन एवं नैराश्य की प्रवृत्तियाँ बढ़ती हुई दिखाई देती हैं ।"[1]

मध्यमवर्ग के लोगों को बेरोजगारी के समय इधर-उधर धक्के खाने पड़ते हैं तथा वे हर समय मायूसी की स्थिति में रहते हैं क्योंकि वह नौकरी के कामों के अलावा दूसरे काम नहीं कर सकते। उन्हें आवश्यकता के समय धन उधार लेकर अपना काम चलाना पड़ता है लेकिन इससे उनकी परेशानी और अधिक बढ़ जाती है क्योंकि उन्हें ये पैसे उतारने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इस वर्ग के युवा इस समाज की व्यवस्था और प्रशासन पर विरोध प्रकट करते हैं तथा संघर्ष के लिए तैयार हो जाते हैं क्योंकि आज की भ्रष्ट-व्यवस्था में बिना सिफारिश और पैसों के नौकरी नहीं मिलती । मध्यमवर्ग के युवा वर्ग की इच्छाएँ और आकांक्षाएँ बिना रोजगार के धरी की धरी रह जाती हैं ।

4.5 दिखावे की प्रवृत्ति का चित्रण

मध्यमवर्ग अपनी वास्तविक स्थिति को छिपाये रखने के लिए दिखावे का आश्रय लेता है । दिखावे की भावना से मध्यमवर्ग प्रभावित होता है । मध्यमवर्ग को दिखावा इसलिए करना पड़ता है कि वह अन्य लोगों से छोटा न समझा जाए और समाज में उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे । देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास 'अपना अपना आकाश' में दिखाया है कि किसी भी संस्था या मंदिर को उच्च मध्यमवर्गीय लोग अपने परिवार के सदस्य के नाम पर ही बनवाते हैं ताकि समाज में उनकी प्रतिष्ठा बनी रहे । "प्रकाश का अपना कमरा है । कमरा सिगरेट के धुएँ से भरा है । चारों तरफ चाय की प्यालियाँ बिखरी पड़ी हैं । प्रकाश ने 8-10 दोस्त इकट्ठा कर लिए हैं.... पिछले महीने उसने हाड़-तोड़ मेहनत की है । किसी तरह वह 'कला मंदिर' को जिलाने में सफल

---

1. डॉ॰ जयश्री बरहाटे, 'हिन्दी उपन्यास का सातवां दशक', पृ॰ 245

हो गया है । अब 'नवोदय कला मंदिर' का नाम बदलकर 'शाकुन्तल कला मंदिर' कर दिया गया है एक नवधनिक की दिवंगत पत्नी के नाम पर ।"[1]

सफेदपोश बने रहने के लिए उसे सब कुछ करना पड़ता है, पर धनाभाव उसके पाँवों में बेड़ी डाल देता है । साधनहीनता मध्यमवर्ग को उच्चता के स्वर्ग से नीचे ढकेलती है और स्तरभेद बनाए रखने के लिए वह नीचे नहीं जा सकता है । आधुनिकता के पीछे दौड़ने से इस वर्ग को हार की खानी पड़ती है । पब्लिक स्कूल की पढ़ाई, फैशनवाली वेशभूषा, शृंगार आदि छोटी-छोटी बातें उसे परायेपन से व्याप्त कर देती हैं । 'काँचघर' के एक परिवार का पुत्र चिकन को किचन कहता है, जिससे उनका पब्लिक और पाश्चात्य संस्कृति का अधकचरापन प्रकट होता है । इसी के परिणामस्वरूप मध्यमवर्ग के युवक माता-पिता तथा परिवार से नफरत करते हैं । गुण्डागर्दी, सैर-सपाटे, कार लिफ्टिंग आदि करते हैं । जिन्दगी के प्रति विफलता से ग्रस्त बनकर 'नवीन' जैसे युवक आत्महत्या कर बैठते हैं और विद्रोह प्रकट करते हैं।

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास 'गुरुकुल' में उच्च मध्यमवर्ग के दिखावे को प्रदर्शित किया है । उन्होंने दिखाया है कि इस वर्ग के लोग अपने को ऊँचा साबित करने के लिए और अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए दिखावे का सहारा लेते हैं । "तभी श्रीमती ओछेलाल एक बड़ी-सी ट्रे में चाय की प्यालियाँ लेकर दाखिल हुईं । उनके पूरे चेहरे पर मुस्कान झलक रही थी । पीछे से उनकी लड़की दूसरी ट्रे में नमकीन की कुछ प्लेटें लेकर आयी और उन्हें मेज पर रखकर वापस चल गयी । मिसेज ओछेलाल एक-एक प्याला उठाकर सबके हाथों में पकड़ाती चल रही थीं ।

-आप क्यों तकलीफ कर रही हैं? लाइये मुझे दीजिये।' यह प्रो॰ जैन का स्वर था । उन्होंने चश्मे के भीतर से झाँकती अपनी शरारती आँखों से डॉ॰ तिवारी की ओर देखते हुए मुस्करा दिया । डॉ॰ तिवारी ने बाहर निकली हुई पान की पीक पोंछ ली और हाथ को अपने भूरे बालों से पोंछ लिया ।"[2]

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र॰सं॰), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ॰ 149
2. वही, देवेश ठाकुर रचनावली-3 (गुरुकुल), पृ॰ 24

उच्च मध्यमवर्ग के लोगों के पास धन होता है जिसे कई बार वे फिजूल ही खर्च करते रहते हैं सिर्फ अपने को बड़ा साबित करने के लिए और श्रेष्ठ बनने के लिए । यह एक दिखावा ही तो है जो देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास 'शून्य से शिखर तक' में शोभा के स्वभाव को दिखाते हुए बताया है । "सहसा उन्हें याद आया कि उनका माली तो छुट्टी पर गया हुआ है । शोभा जी ने फूलों-पौधों का ध्यान रखा होगा कि नहीं । वह भी तो कम व्यस्त नहीं रहती। क्लब, सोशल्स, शॉपिंग और किटी पार्टियाँ । पिछली बार एक ही दिन में पच्चीस हजार हार गयी थी और बाद में हार का जश्न मनाने के लिए ऑबेराय में अपनी सहेलियों को एक पार्टी भी दे डाली थी । कितनी मूडी है शोभा भी ।"[1]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मध्यमवर्ग के लोगों को अपने को उच्च और अच्छा साबित करने के लिए दिखावे का सहारा लेना पड़ता है । समाज में अपने को प्रतिष्ठित दिखाने के लिए किसी भी संस्था या मंदिर को अपने या अपने किसी पारिवारिक सदस्य के नाम पर बनवाते हैं । सफेदपोश बने रहने के लिए उन्हें हर स्थान पर दिखावा करना पड़ता है । ये लोग अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ाना चाहते हैं लेकिन उनके पास इतना धन नहीं होता । इन स्कूलों में यदि दाखिला करवा भी दिया जाता है तो वे सही ढंग से पढ़ाई वहाँ नहीं कर पाते । कई स्थानों पर देखा गया है कि इस वर्ग के लोगों के पास यदि धन है तो उसको दिखावे के लिए ऐसे ही फिजूल खर्च कर देते हैं और सोचते हैं कि इससे हमारी प्रतिष्ठा और महत्त्व बढ़ेगा । कई बार तो मध्यमवर्गीय माता-पिता के दिखावे की भावना के कारण बच्चों को भी इसकी आदत पड़ जाती है जिससे उन्हें जिन्दगी में विफलता मिलती है और इसके कारण वे आत्महत्या भी कर बैठते हैं और अपना विरोध प्रकट करते हैं ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-3 (शून्य से शिखर तक), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 133

4.6 आर्थिक सुरक्षा का चित्रण

मध्यमवर्ग अपनी आमदनी देखकर ही खर्च का निर्णय करना चाहता है । मध्यमवर्ग घर की बड़ी-बड़ी चीजें, योजना बनाकर हर महीने की आय में से कुछ बचाकर खरीदने का प्रयत्न करता है। वह एक महीने की आय-व्यय का बजट बनाकर खर्च का निर्णय करता है। भले ही सभी उसमें सफल नहीं होते। आर्थिक सुरक्षा के लिए मध्यमवर्गीय नारी भी प्रयत्नशील रहती है । जब उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहती तो वह किसी-न-किसी प्रकार का कार्य करके आर्थिक सुरक्षा चाहती है । 'इसीलिए' उपन्यास की नायिका मीनाक्षी पैसा कमाने के लिए वेश्या-व्यवसाय अपनाती है और अपने परिवेश के प्रति असंतोष से उपजी मानसिक विकृति का शिकार होकर अवस्थी के साथ एक सामान्य जिन्दगी जीने से बचने का प्रयास करती है । मैं तुम्हारी प्रेमिका नहीं हूँ, एक वेश्या हूँ, जो व्यक्ति विशेष की नहीं । सम्पूर्ण समाज की होती है । "मैं इतना पैसा कमाना चाहती हूँ कि अपनी संतान को राजकुमारों जैसा रख सकूँ। मैंने अपना जीवन अपने अजन्में बालक को समर्पित कर दिया है । मैं यह पाप अपने उस पुण्य को बटोरने के लिए कर रही हूँ।"[1]

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास 'भ्रमभंग' में नायक चंदन की आर्थिक स्थिति को दिखाया है कि वह कॉलेज में प्रोफेसर लगने के बाद भी घर का खर्च किस प्रकार से चलाता है और सोच-समझकर ही पैसा खर्च करता है क्योंकि कहीं उसे भविष्य में अनेक परेशानियों का सामना न करना पड़े । वह कहता है, "अब साढ़े तीन सौ मिलते हैं । दो सौ घर भेज देता हूँ । डेढ़ सौ में अपना खर्च चलाता हूँ । लोगों का देना कम नहीं होता । घर की चीजें जोड़ रहा हूँ । पिछले साल घर के लिए सोफा खरीदा था । कुन्दन के लिए एक साईकिल भी । अभी तक उनकी इन्स्टॉलमेंट चल रही है । फिर क्रॉकरी....बर्तन....कपड़े । चम्पा का अंग्रेजी का ट्यूशन । मैट्रिक में आ गयी है लेकिन अभी तक 'आई एम गो' कहती है । क्या करूँ । उसे पढ़ाना भी

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिए), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 50

जरूरी है । मध्यमवर्ग में जब तक स्त्री-पुरुष दोनों काम नहीं करते, परिवार का उठना मुश्किल रहता है ।"[1]

मध्यमवर्गीय व्यक्ति सिर्फ अपनी कमाई से न परिवार को पाल सकता है न ऊपर उठा सकता है । इसीलिए निम्न मध्यमवर्गीय चंदन को नौकरी करने वाली सुशीला डंग के साथ शादी करनी पड़ती है क्योंकि वह भी समाज में अपनी आर्थिक सुरक्षा चाहता है जिससे उसका जीवन सही ढंग से व्यतीत हो सके ।

इस प्रकार देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्ग के लोग आर्थिक सुरक्षा चाहते हैं क्योंकि उन्हें अपने भविष्य की चिंता होती है। वे जितना कमाते हैं इस महँगाई के दौर में वह सब खर्च हो जाता है । 'इसीलिए' उपन्यास की नायिका मीनाक्षी वेश्या-व्यवसाय द्वारा धन एकत्रित करके अपने अजन्मे बच्चे के भविष्य को सँवारना चाहती है । 'भ्रमभंग' उपन्यास का नायक चंदन प्रोफेसर बनने के बावजूद भी इतना नहीं कमा पता कि अपने सारे परिवार की इच्छाओं की पूर्ति कर सके । इसलिए वह एक नौकरीशुदा लड़की के साथ विवाह करता है ताकि वह भविष्य में अपने सपनों को साकार कर सके । इस वर्ग के लोग आर्थिक सुरक्षा करके जीवन को सुखी बनाना चाहते हैं क्योंकि वे जीवन में किसी के भी सामने हाथ फैलाकर अपना जीवन व्यतीत नहीं करना चाहते । अपने जीवन में अर्थ समस्याओं के कारण ही वे आर्थिक सुरक्षा चाहते है ।

4.7 आर्थिक समस्याओं का चित्रण

मध्यमवर्ग पर आर्थिक संकट बुरी तरह छाया रहता है । उसे सफेदपोश बने रहने के लिए सब कुछ करना पड़ता है, पर धनाभाव उसके पगों में बेड़ी डाल देता है । इस आर्थिक संकट के फलस्वरूप ही कहीं निम्न मध्यमवर्गीय माँ-बाप अपनी बेटी का विवाह करने में असमर्थ रहते हैं और कहीं कर्ज के बोझ से दबकर विवाह करते हैं तो कहीं अनमेल विवाह करके लड़की को

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 62

उसके भाग्य पर छोड़ने का विश्वास कर, अपने कर्त्तव्य से छुट्टी पा लेते हैं । आर्थिक संकट के कारण ही निम्न मध्यमवर्ग अच्छे मकान में रहने की अपनी इच्छा को भी पूरी नहीं कर पाता । अच्छे तथा पौष्टिक भोजन के लिए लालायित रहता हुआ भी उसे प्राप्त नहीं कर पाता। हाँ, वस्त्रों के विषय में वह स्वतंत्र नहीं है । देखा-देखी उसे वस्त्र अच्छे और साफ पहनने ही पड़ते हैं अन्यथा वह मध्यमवर्ग का कैसे कहलाये? आर्थिक संकट मध्यमवर्गीय जीवन में निराशा और खिन्नता का संचार कर रहा है । कहीं पति अपनी पत्नी से नौकरी करवाकर अपनी स्थिति को सुधारने का प्रयत्न करता है तो कहीं स्वयं उसे अनैतिक हो, आय के अन्य स्त्रोतों की शरण लेनी पड़ती है। मध्यमवर्ग की स्थिति जटिल है और उसकी आकांक्षाएँ अदम्य हैं । मध्यमवर्ग और निम्न मध्यमवर्ग की मुश्किलें नगर के मुकाबले महानगर में अधिक बढ़ी-चढ़ी हैं । वहाँ खाली जेब लिए निम्न मध्यमवर्गीय व्यक्ति अपने को खाली बोतल की तरह निरर्थक समझने लगता है। इस खालीपन को भरने के लिए वह मिल, दफ्तर आदि में जी-तोड़ मेहनत करता है लेकिन हर जोखिम उठाने के बावजूद भी पेट भरने की समस्या बनी रहती है । डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय जी कहते हैं, "मध्यमवर्ग की यह विडम्बना है कि यह रूढ़ियों और टैबूज को तोड़ने की बलवती इच्छा रखते हुए भी उन्हें तोड़ नहीं पाता है । इस असफलता के फलस्वरूप उसमें कुण्ठा, एकाकीपन, अजनबीपन, घुटन, निरुद्देश्यता, नपुंसक आक्रोश आदि मानसिक स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं ।"[1]

मध्यमवर्गीय व्यक्ति सिर्फ अपनी कमाई से न परिवार को पाल सकता है न ऊपर उठा सकता है । इसी कारण चन्दन को मध्यमवर्गीय नौकरी करने वाली सुशीला डंग के साथ शादी करनी पड़ती है ।

देवेश ठाकुर ने 'जनगाथा' उपन्यास में मध्यमवर्गीय समाज की आर्थिक समस्याओं को इस रूप में उजागर किया है कि उनकी जीवन-शैली ऐसी हो जाती है, जहाँ वक्त का अभाव, स्थान की दूरियाँ और अति व्यस्तता मनुष्य

---

1. डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 47

को मौके-बे-मौके का ध्यान नहीं रहने देती । शकुन की माँ की मृत्यु पर ऐसा ही दृश्य दिखाई देता है। "कितने सारे लोग आए हमारे दु:ख में शरीक होने.... आए थे वो माँ का शोक मनाने और मना गए मेरे दुर्भाग्य का शोक भी। औरतों ने एक पल आँसू बहाये और दूसरे पल वे आपस में अपनी घर-गृहस्थी की बातों में लग गई । मर्द लोग बुझा-सा चेहरा लेकर दाखिल होंगे और फिर नौकरी की, बिजनेस की, जमा-तोड़ की, नफे-नुकसान की बातें शुरू हो जाएँगी ।"[1] इसके साथ-साथ इस उपन्यास में यह भी देखने को मिलता है कि इस वर्ग के पास एक समय पर जहर खाने को भी पैसा नहीं होता और वे निरन्तर अभावों में अपनी जिंदगी व्यतीत करते हैं । "इन दिनों एक और मुश्किल झेलनी पड़ रही है । अब ये ज्यादातर घर में ही रहते हैं। इस कारण मैं पलंग की चादर बनकर रह गई हूँ । चाहे दिन हो या रात- ये मुझे निचोड़ने का कोई मौका नहीं चूकते । उधर सास और ननदें ऐसे गन्दे-गन्दे शब्दों से मुझ पर व्यंग्य करती हैं कि मन होता है- आत्महत्या कर लूँ या इन सबको जहर देकर मार डालूँ । लेकिन जहर भी कहाँ से लाऊँ.... उसके लिए भी तो पैसे चाहिए।"[2] इस वर्ग के लोग पैसे को बहुत महत्त्व देते हैं और अपना जीवन पैसे के लिए ही व्यतीत करते हैं तथा पैसे में बहुत शक्ति होती है, यह मानते हैं । "सारी मुश्किल पैसे की होती है । पैसा न होता तो पंख कैसे लगते? एक लड़की को पूरे दिन के लिए कैसे रखा जाता? हर रोज पाव-भर गोश्त कैसे आता? रोज टैक्सी से अस्पताल आना-जाना कैसे होता? फिर फलों, दवाइयों और दूसरे सामान का खर्च । पैसे में कम जोर नहीं होता ।"[3] इस प्रकार, पैसा ही एक समय में भगवान से कम नहीं होता।

उच्च मध्यमवर्ग के पास धन तो बहुत होता है लेकिन वह खुशी नहीं मिल पाती जो मनुष्य को सारी सुख-सुविधा होते हुए मिलनी चाहिए । देवेश

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 359
2. वही, पृ० 367
3. वही, पृ० 462

ठाकुर के उपन्यास 'इसीलिए' के उच्च मध्यमवर्गीय अवस्थी के जीवन में सुविधाएँ तो भरपूर हैं लेकिन सुख नाम की कोई चीज नहीं है । क्योंकि सुविधाएँ सुख की गारंटी नहीं होती । सम्पन्नता, सुख का पर्याय नहीं है । जब तक व्यक्ति, सुविधाओं के अभाव में जीता है, तब तक निश्चित रूप से सुविधाएँ उसे आकर्षित करती हैं । लेकिन सुविधाओं का विस्तार उसे सुख ही दे, यह आवश्यक नहीं है ।

मध्यमवर्ग का व्यक्ति कई बार आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण बैचेन और परेशान रहता है, जिस कारण वह कुछ न कुछ सोचने पर मजबूर होता है और उधार भी माँग लेता है तथा अपना जीवन संवारने की सोचता है। 'शून्य से शिखर तक' उपन्यास में दिखाया गया है कि मध्यमवर्गीय सदानंद द्वारा उधार लिया हुआ पैसा उसके जीवन में बदलाव लाता है । वह सोचता है- "उस समय अगर प्रकाशक राजशेखर ने मेरी सहायता न की होती तो पता नहीं मैं आज कौन-सी जिन्दगी जी रहा होता । अग्रिम धन के 3000 रु० ने मेरी जिन्दगी को नई दिशा दे डाली और मुझे अपनी तरह रहने के साथ-साथ अपनी जीविका कमाने का एक मन्त्र भी मिल गया।"[1]

इस वर्ग को आर्थिक समस्याएँ निरन्तर सताती रहती हैं । जब भी कोई बड़ा खर्चा हो जाता है तो आर्थिक स्थिति डावांडोल हो जाती है और उभरने से पहले ही मध्यमवर्गीय व्यक्ति दब जाता है। जब 'अन्ततः' उपन्यास के राघवन के पिता का हार्ट अटैक हो जाता है तो उसे चिंता हो जाती है क्योंकि डॉक्टर ने उसके पिता की सर्जरी के लिए एक लाख रूपए माँगे हैं । अपनी यह समस्या वह वसुधा के सामने रखता है तो वह पच्चीस हजार देने की बात कहती है लेकिन फिर वह सोच में पड़ जाती है कि इतने पैसे देने पर वह अपना काम कैसे चलाएगी । एक बार जब राघवन उसे फ्लैट के पैसे देने की बात करता है तो इस पर भी वसुधा सोचती है क्योंकि वह पैसे की मामले में निश्चित रहना चाहती है कि कहीं एक समय पर उसे पैसे की

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-3 (शून्य से शिखर तक), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 187

दिक्कत न आ जाए । राघवन कहता है- "उसे बीस हजार अभी देने है । पांच हजार मेरे भी कम पड़ रहे हैं ।"[1] इस पर वसुधा सोचती हुई कह जाती है- "मेरे पास तो इतने पैसे हैं नहीं ।"[2] यह उसकी आर्थिक समस्या को दर्शाती है कि उसके पास पैसे की कमी है जिसे वह पूरा नहीं कर पाएगी।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक तरफ तो निम्न मध्यमवर्ग को आर्थिक समस्या हर समय सताती रहती है और दूसरी तरफ उच्च मध्यमवर्ग के पास सुविधाएँ होते हुए भी वह दु:खी रहता है। इसीलिए कहीं-न-कहीं उसे कोई न कोई समस्या सताती रहती है । उसको भी आर्थिक समस्याएँ होती ही हैं जो उसकी सारी इच्छाओं को पूरा होने से रोकती हैं ।

4.8 महँगाई से पीड़ित

निरन्तर बढ़ती हुई महँगाई से मध्यमवर्ग बहुत चिंतित रहता है। जिस गति से वस्तुओं के दाम बढ़ने से महँगाई बढ़ी है, उस गति से वेतन में वृद्धि नहीं हुई । आँसू पोंछने के लिए महँगाई भत्ते में कभी दस-पन्द्रह रूपये बढ़ भी गए तो उनसे कुछ अन्तर नहीं पड़ता। किसी-न-किसी वस्तु पर सरकारी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष 'कर' लग जाने से उतने रुपये जैसे आये वैसे ही चले जाते हैं ।

वर्तमान समय में महँगाई इतनी बढ़ रही है कि एक नौकरी पेशा व्यक्ति भी शादी करने से पहले सोचता है कि उसकी शादी भी नौकरी करने वाली लड़की से हो ताकि उनके परिवार का खर्च अच्छे से चल सके । 'भ्रमभंग' के नायक चंदन को मध्यमवर्गीय नौकरी करने वाली सुशीला डंग के साथ शादी करनी पड़ती है क्योंकि इस महँगाई के दौर में वह सिर्फ अपनी कमाई से न परिवार को पाल सकता है और न ही ऊपर उठा सकता है । परिवार की आर्थिक स्थिति न बिगड़े इसलिए वह अपना परिवार नियोजन भी करता है ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-3 (अन्तत:), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 365
2. वही

धनाभाव के कारण कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त युवतियों का विवाह सामान्य आदमी से किया जाता है जिसके कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । फिर भी औरतें इस महँगाई के दौर में कठिनाईयों को निरन्तर सहती रहती है । जैसे 'जनगाथा' की सरिता जो एम०ए० है और 'काँचघर' की बिन्दु ।

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में महँगाई के कारण मध्यमवर्ग पर निरन्तर पड़ रहे प्रभावों को बताते हुए कहा है कि महँगाई का कारण अमीरों के पास पैसों की अधिकता है और वे इन पैसों को ऐसे ही फूँकते रहते हैं जिससे वस्तुओं के दामों में निरन्तर वृद्धि हो रही है, जिसका सबसे अधिक प्रभाव निम्न मध्यमवर्ग को झेलना पड़ रहा है। 'अपना-अपना आकाश' में एक स्थान पर चन्द्रहास समझा रहा है। "1970 के बाद से महँगाई बहुत तेजी से बढ़ रही है । इसका पहला कारण तेल की कीमत का बढ़ना है । कोयले की कीमत भी इसी बीच बहुत तेजी से बढ़ी है । इसके साथ-साथ एक बात और हुई है। कुछ लोगों के पास खरीद के लिए नकद पैसा बहुत हो गया है। इस सब ने महँगाई को निरन्तर बढ़ाया है ।"[1] महँगाई के कारण मध्यमवर्ग का जीवन निरन्तर बदत्तर होता जा रहा है और वह न तो सही से खा सकता है और न ही सही से रह सकता है ।

मध्यमवर्ग को हमेशा यह चिंता सताये रहती है कि कहीं समाज में उसकी इज्जत कम न हो जाए । इसीलिए वह निरन्तर दिखावा करता रहता है और दूसरी तरफ महँगाई का डर भी । फिर भी वह क्या करे, उसे तो उपभोग करना ही पड़ेगा, चाहे कितनी भी महँगाई क्यों न हो, जिससे उसकी परेशानियाँ निरन्तर बढ़ती रहती हैं। इस स्थिति में उसे पुराने जमाने की सस्ती वस्तुओं की याद आती है लेकिन वर्तमान की महँगाई के बारे में वह कुछ नहीं कर सकता । देवेश ठाकुर के उपन्यास 'जनगाथा' में दिखाया गया है-

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 137

"महँगाई कितनी बढ़ गई है । कल कुछ मेहमान आ गए थे । मटर लेने गई। सोलह रुपये किलो । टमाटर आठ रुपये किलो ।

– इन्दिरा की जय बोलो । सारी सब्जियाँ गल्फ कन्ट्रीज में जा रही हैं। यहाँ महँगाई नहीं होगी तो क्या होगी ।

– और क्या? कल सलाद के लिए ककड़ी लेने गई । 6 रुपए किलो। दो सौ ग्राम लेकर लौट आई । कभी जमाना था, आधा किलो में दो सौ ग्राम तो छिलके ही निकाल देते थे ।

– अब छिलकों की सब्जी बनाओ ।"[1]

मध्यमवर्ग हर समय महँगाई से पीड़ित रहता है और उसे विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त रहना पड़ता है तथा वह अपने को अच्छा भी दिखाना चाहता है । देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यास 'जनगाथा' में दिखाया है, "जोशी मेरा बहुत पुराना दोस्त है । जब से यहाँ आया हूँ, लगभग तभी से । उन दिनों मैं एक होटल में रहता था । एक कमरे में चार खाटें । पचास रुपए प्रति खाट । खाना-पीना सब बाहर । बहुत महँगा पड़ता था । एक दिन यह मेरे होटल में आया । इसने देखा, बोला-तू मेरे साथ क्यों नहीं रह लेता। दो कमरे हैं । किचन है । नौकर है । जब तक तेरी शादी नहीं हो जाती, तू मेरे साथ रह सकता है ।"[2] एक तरफ तो मध्यमवर्ग का युवक महँगाई से पीड़ित है तथा दूसरी ओर मध्यमवर्गीय युवक अपने को समृद्ध दिखाता है और उसे अपने पास रहने को कहता है ।

इस प्रकार देवेश ठाकुर का मध्यमवर्ग महँगाई से निरन्तर पीड़ित रहता है, जिसके कारण उसे अपनी इच्छाओं को मारना पड़ता है तथा शादी भी ऐसी लड़की से करना चाहते हैं जो नौकरी करने वाली हो । इस महँगाई के दौर में मध्यमवर्ग अपने तथा अपने परिवार का जीवन ऊपर नहीं उठा पाता । इस महँगाई के दौर में निरन्तर समस्याएँ बढ़ी हैं, जिससे यह वर्ग परेशानियों और कुण्ठाओं का शिकार बना हुआ है ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 296
2. वही, पृ० 271

देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति बड़ी जटिल दिखाई है । निम्न मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वह अशान्त रहता है और उसके सारे कार्य पूर्ण नहीं हो पाते लेकिन दूसरी ओर उच्च मध्यमवर्ग के पास धन तो होता है और उसे सुविधाएँ भी मिलती हैं लेकिन उसे वह सुख नहीं मिल पाता जिसकी उसे तलाश होती है । मध्मयवर्ग की इच्छाएँ असीमित होती हैं, जिससे उनके अन्दर लालच की प्रवृत्ति आ जाती है और वे केवल धन को ही महत्त्व देते हैं, पारिवारिक रिश्ते-नातों को भी इस समय वे भूल जाते हैं । इस वर्ग के लोग भविष्य के प्रति सचेत होकर धन अर्जित करते हैं और आर्थिक सुरक्षा चाहते हैं ताकि वे अपना जीवन सुख से व्यतीत कर सकें । यह वर्ग अच्छे तथा पौष्टिक भोजन के लिए लालायित रहता हुआ भी उसे प्राप्त नहीं कर पाता । बेकारी या अर्द्धबेकारी इस वर्ग को लंगड़ा बना देती है तथा अपनी वास्तविक स्थिति को छिपाये रखने के लिए यह वर्ग दिखावे का आश्रय लेता है क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसे अन्य लोगों से छोटा समझा जाए । वह चाहता है कि समाज में उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे । इस वर्ग में निम्न मध्यमवर्ग के कुछ लोगों के पास तो न अपना स्वयं का मकान होता है और न ही अधिक धन सम्पत्ति होती है लेकिन उच्च मध्यमवर्ग के पास अपना मकान और सारी सुख-सुविधाओं के सामान होते हैं । फिर भी यह वर्ग अनेक प्रकार की आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त रहता है और कुण्ठाएँ तथा परेशानियाँ उसे हमेशा घेरे रहती हैं क्योंकि वर्तमान युग में महँगाई निरन्तर बढ़ रही है और इस वर्ग की सारी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती ।

इस प्रकार, मध्यमवर्ग को बहुत-सी आर्थिक समस्याएँ हैं जिससे न तो वह अपनी सभी आशाओं-आकांक्षाओं-इच्छाओं की पूर्ति कर पाता है और न ही अपने परिवार को ऊपर उठा पाता है । वह अच्छा और पौष्टिक भोजन भी प्राप्त नहीं कर पाता, जिससे उसे कुण्ठाओं और परेशानियों से ग्रस्त होना पड़ता है क्योंकि वह बेरोजगारी का जीवन-यापन कर रहा होता है और निरन्तर दिखावे का आश्रय लेता है ।